Shodhshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
© 2020 SHISRRJ | Volume 3 | Issue 1 | ISSN : 2581- 6306

जमीन से जुड़े चित्रकार : डॉ0 राम शब्द सिंह

डॉ. संतोष बिंद
प्रवक्ता, राजकीय बालिका इंटर कॉलेज,
हुसैनगंज, फतेहपुर, उत्तर प्रदेश,भारत।

सारांश– पूर्वांचल के ग्रामीण परिवेश के उन्हीं लोक कला तत्वों को ये कला की आधुनिक शैली में सृजित करते हैं। बचपन में खेले गये मिट्टी लकड़ी के खिलौनों, विभिन्न तीज त्योहारों व उत्सवों पर बनने वाली चित्रकारी इनकी कला का प्रमुख तत्व है। परम्परा व आधुनिकता के नवीन सम्मिश्रण ने इनकी कला को एक अलग पहचान दी है, जिसे आधुनिक शैली में प्रतीकात्मक शैली के अन्तर्गत रखा जा सकता है।

मुख्य शब्द– जमीन,चित्रकार, डॉ0 राम शब्द सिंह, ग्रामीण, लोक–कला।

''अपने चित्रों में मैं प्रकृति में बिखरे सौन्दर्य को रंगो रेखाओं द्वारा समेट लेना चाहता हूँ जिसे मैं बार–बार देखकर आनन्द ले सकू। यही कारण है कि मैं अपने चित्रों में खुशनुमा रंगो का प्रयोग करता हूँ। चित्रकला में रंग चयन, मैं अपने इच्छा और स्वभाव से करता हूँ प्रकृति के बदलते वातावरण के साथ रंगो के बदलाव मुझे ज्यादा प्रभावित किया है।''[1]

डॉ.राम शब्द सिंह

डॉ0 राम शब्द सिंह उत्तर प्रदेश के प्रमुख चित्रकारों में ऐसा नाम है जिनके चित्रों में लोक कला से घनिष्टता स्वतः दिखाई पड़ती है उनके चित्र लोक जीवन की सुन्दर झांकी है। गॉव की मिट्टी के प्रति उनका मोह उनके चित्रों को देखने से स्पष्ट परिलक्षित होता है। कच्ची झोपड़ी दरख्तों के साये, टेढ़ी, मेढ़ी पगडण्डियां, पहाड़ों को चूमते बादल और गॉव की किशोरी या फिर बालक[2] तथा विभिन्न लोकरूप इनके चित्रों में प्रमुख स्थान पाते है।

'ग्रामीण मिट्टी के खिलौनो, भित्वि चित्रों व दैनिक जीवन से जुड़े कलात्मक लोकरूपों का संकलन व अध्ययन कर उन रूपाकारों को आधुनिक चित्रशैली का कहा जा सकता है। लोक रूपों को डॉ0 सिंह उसी रूप में न उतार कर दूसरी शैली के रूपांकनों, रंगो रेखाओं को आत्मसात कर उसे एक नये रूप मं

चित्रित किया है।'[3] उनके चित्रों में ग्रामीण मिट्टी के खिलौने हाथी, घोड़ा, मछली, तोता आदि का आकर्षक संयोजन देखने को मिलता है। लोक परम्परा का निर्वहन करते हुए आधुनिक कला के नये प्रयोगों पर विशेष बल दिया है।

डा0 राम शब्द सिंह का जन्म जुलाई 1950 को आजमगढ़ के अहिरौली नामक गाँव में एक मध्यमवर्गीय राजपूत परिवार में हुआ। पिता श्री सत्य नारायण सिंह, बम्बई में बेस्ट कम्पनी में कार्यरत थे। पिता के बाहर रहने के कारण लालन पालन दादा श्री सरजू सिंह की देश रेख में हुआ। प्रारम्भिक शिक्षा गॉव में ही हुई। कक्षा दो में वार्षिक निरीक्षण के दौरान डिप्टी साहब द्वारा इनके चित्र की प्रशंसा की गई। समय–समय पर कला अध्यापक भी चित्रों की सराहना करते जिससे कला में रूचि निरन्तर बढ़ती गयी। प्रारम्भ में पत्र–पत्रिकाओं में छपे चित्रों की प्रतिकृतियाँ बनाकर अभ्यास किया करते थे। जब वे ग्यारहवीं कक्षा में थे तब इनका चित्र ''मदर एण्ड चाइल्ट'' पहली बार दस रूपयें में खरीदा गया। यह चित्र रेखांजली पत्रिका के आवरण पृष्ठ पर बने रेखांकन के आधार पर बनाया गया था।

पूर्ण रूप से ग्रामीण आचरण में ढले राम शब्द जी कला प्रतिभा को प्रोत्साहित करने हेतु कला शिक्षा सम्बन्धी जानकारियों के प्रति अनभिज्ञ थे। कला में वास्तविक रूझान उस समय आया जब वे इण्टरमीडिएट की परीक्षा उत्तीर्ण करने के पश्चात् बाम्बे आर्ट की परीक्षा देने के उद्देश्य से काशी हिन्दु विश्वविद्यालय आये। यहाँ पर कला के छात्रों को रेखांकन करते देखा। यह इनके लिए नवीन अनुभव था। जादू के समान निरूपित होती आकृतियों को देखा। उस समय सबसे अधिक आकर्षित करने वाला रेखांकन एस0 एन0 लहरी का था, जो स्वैटर बुनती एक महिला का था। प्रो0 लहरी दिल्ली आर्ट स्कूल से सम्बन्धित है।

उपरोक्त घटना के पश्चात् राम शब्द सिंह ने काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के ललित कला विभाग में होने वाली प्रवेश परीक्षा उत्तीर्ण की अत्यधिक साधारण व्यक्तित्व वाले श्री सिंह की प्रतिभा को तत्कालीन कला शिक्षक प्रो0 राम चन्द्र शुक्ल ने पहचाना और बी0 एफ0 ए0 में प्रवेश दिया। इन्होंने प्रथम वर्ष में ही सर्वाधिक अंक प्राप्त कर अपना विशेष स्थान बनाया।

सन् 1964 में श्री राम शब्द का विवाह दुर्गावती से हुआ जो स्वभाव से अत्यन्त सरल व कोमल हृदया व मृदुभाषी हैं। 1972 में ललित कला की वार्षिक प्रदर्शनी में पहली बार इनकी काष्ठमूर्ति शिल्प माँ व शिशु प्रदर्शित हुआ। 1974 में दृश्य चित्रों की प्रथम एकल प्रदर्शनी का आयोजन हुआ। ''राम शब्द में कल्पना, प्रतिभा और कौशल तीनों ही है। जिस दिन तीनों निर्बाध गति से कला सुमन के रूप में प्रस्फुटित होंगे उस दिन निश्चित ही दिशाएँ सुवासित हो उठेंगी।''[4]

इसके पश्चात् उत्तर प्रदेश राज्य ललित कला अकादमी में प्रदर्शनियों का क्रम प्रारम्भ हुआ जो अब तक जारी है। 1977 में काशी हिन्दू विश्वविद्यालय से एम0 एफ0 ए0 की डिग्री प्राप्त करने के पश्चात् उसी

वर्ष के0 के0 जैन डिग्री कालेज खतौली मुजफ्फर नगर में कला प्रवक्ता के पद पर नियुक्त हुए। 1982 में वाराणसी जनपद की लोककलाओं का विश्लेषणात्मक अध्ययन विषय पर शोध कार्य मेरठ विश्वविद्यालय में पूरा किया। शोध कार्य में बनारस की लोककलाओं की सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक और भौगोलिक पृष्ठभूमि का गहन अध्ययन किया। 1986 में जे0 वी0 जैन कॉलेज, सहारनपुर के चित्रकला विभाग में रीडर पद पर नियुक्त हुए।

डॉ0 राम शब्द सिंह के कला गुरूओं में डा0 पी0 पटनायक, प्रो0 राम चन्द्र शुक्ल, पो0 के0 एस0 कुलकर्णी0, प्रो0 दिलीप दास गुप्ता, प्रो0 एम0 वी0 कृष्णन, प्रो0 डी0 एल0 वोहरा, प्रो0 दीप बनर्जी डा0 एच0 एन0 मिश्रा प्रमुख थे। प्रारम्भ में गुरू दिलीप दास गुप्ता के चित्रों का प्रभावा था। दिलीप दास गुप्ता अमूर्त चित्रण किया करते थे। डॉ0 राम शब्द सिंह उनके रंग मिश्रण तकनीक, रंगरूप संयोजन से प्रभावित थे, परन्तु विषयों के प्रति स्वतन्त्र रहे। राम शब्द उत्तर प्रदेश के शीर्षस्थ कलाकारों में से एक है इनकी कला सम्भावनाओं से भरी हुई है और युवा कलाकारों को प्रेरित करने में समर्थ है। मुझे आशा है दर्शक और खासकर युवा कलाकार उनकी आत्मीय कृतियों को देखकर आनन्दित होंगे और प्रेरणा ग्रहण करेंगे।[5]

डॉ0 राम शब्द सिंह अध्यापक के रूप में अपने शिष्यों के लिए मार्गदर्शक एवं प्रेरणास्रोत रहे हैं। मेरी कला शिक्षा जे0 वी0 जैन कॉलेज, सहारनपुर से सिंह सर के निर्देशन में ही सम्पन्न हुई है। सौभाग्यवश तब से लेकर अद्यतन इनका अपार स्नेह और मार्गदर्शन मुझे प्राप्त होता रहता है। शिष्यों के प्रोत्साहन हेतु समय–समय पर विभाग में कार्यक्रमों का आयोजन होता रहता था। इनके निर्देशन में शिष्य स्वतन्त्र मनोभावों के अनुरूप चित्रण करते। सिंह सर के सानिध्य में बिताए गये क्षणों को भूल पाना असम्भव है।

अत्यन्त सरल व्यक्तित्व के स्वामी, एवं मृदुभाषी डा0 राम शब्द सिंह के चित्र भी दर्शक के हृदय से सक्षात्कार करते हैं। जिन भावों को वे अपने चित्रों के माध्यम से व्यक्त करते है दर्शक उन्हें बखूबी आत्मसात कर लेता है। किसी कलाकार की कलाकृति उनके अन्तः करण की वह प्रेरणा होती है जो वह अपनी तूलिका से सधे हाँथों द्वारा सहज ही में व्यक्त कर देता है। कोई वजह नहीं कि सफल कलाकार की कला उसके द्वारा प्रकट किये जाने वाले भावों से मुंह मोड ले। यही उसकी कला की सफलता और लोकप्रियता का मापदण्ड होता है।[6]

डॉ0 राम शब्द ऐसे कलाकार है जिन्होंने लोक समाज की मूल भावना को पहचाना और अपने चित्रों में स्थापित किया। बचपन से ही ग्रामीण समाज से जुडे राम शब्द विभिन्न तीज त्योहारों, मंगलकार्यों, शादी विवाह के मौकों पर बनने वाली लोक कलाओं के अत्यधिक नज़दीक रहे। यह प्रभाव उनके चित्रों में आज भी परिलक्षित होता है। ''लोक कला के मूल तत्वों में रेखाओं, रंगों का सरलीकरण, भावाभिव्यक्ति का सरलीकरण

है। जब लोक कलाकार किसी चित्र को बनाता है तो उसके चित्रों में रूपाकार सहजता सरलता से प्रवाहित होते प्रतीत होते हैं। ये मोटिफ्स (Motifs) उसके जीवन दर्शन तथा मांगल्य की भावना से जुड़े होते हैं। सभी मौलिक तत्त्व लोक चित्र में सौन्दर्य का सृजन करते हैं। बनावटीपन लोक कलाकार के जीवन तथा चित्र दोनों में ही नहीं होता है, किसी भी लोक चित्र को बनाते समय कलाकार गेरू, गोबर या खड़िया उठाता है और चित्र बनाता चला जाता है जैसे पहले से उसके दिमाग में सब कुछ कन्फर्म (Confirm) सा है यही उसकी सहजता है।''[7]

'पूर्वांचल के ग्रामीण परिवेश के उन्हीं लोक कला तत्वों को ये कला की आधुनिक शैली में सृजित करते हैं। बचपन में खेले गये मिट्टी लकड़ी के खिलौनों, विभिन्न तीज त्योहारों व उत्सवों पर बनने वाली चित्रकारी इनकी कला का प्रमुख तत्व है। परम्परा व आधुनिकता के नवीन सम्मिश्रण ने इनकी कला को एक अलग पहचान दी है, जिसे आधुनिक शैली में प्रतीकात्मक शैली के अन्तर्गत रखा जा सकता है।'[8]

पश्चिमी उत्तर प्रदेश के सहारनपुर जिले में प्राध्यापक के पद पर नियुक्त होने के बाद, वहाँ के विभिन्न क्षेत्रों में जाकर वहाँ के लोकचित्रों का अध्ययन तथा संकलन किया। पश्चिमी उ0प्र0 में नवरात्र के अवसर पर बनाई जाने वाली सांझी लोक कला ने अत्यधिक प्रभावित किया। विभागीय कार्यशाला के दौरान लोककलाकार यशोदा देवी के सानिध्य में मधुबनी लोक चित्रकला का भी गहन अध्ययन किया एवं अनेक प्रयोग भी किये। लोक कला से प्रभावित अनेक चित्र राज्य ललित कला अकादमी, लखनऊ, उत्तर प्रदेश की आमंत्रित चित्रकला प्रदर्शनी में प्रदर्शित हुए।

'मन में प्रश्न उठना स्वाभाविक है कि जब देश के कलाकारों के बीच पाश्चात्य आधुनिक कला की अंधी आंधी चल रही हो उस बीच एक समकालीन कलाकार लोक–कला के प्रति आकर्षित हो ऐसा क्यों? वस्तुतः भारतीय लोक कलाओं में वे सभी तत्व मौजूद हैं जो आधुनिक कला खोजती है बस अन्तर इतना है कि लोक–कला धार्मिक और पौराणिक लोककलाओं से भी प्रेरणा लेती है और आधुनिक कला सिर्फ वैज्ञानिक युग से।

''राम शब्द के साहस की सराहना करनी होगी कि आज के युवा कलाकारों के सामने उन्होंने एक नया अध्याय उपस्थित कर दिया है जो श्रेष्ठतम् संभावनाओं से लबालब है। यह नया कदम उठाकर राम शब्द ने भावी कला के नये मोड़ की घोषणा कर दी है।[9]

कला अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम है, चित्रकला उसका साकार रूप है, श्रुति परम्परा से आगे बढ़कर जब ज्ञान को स्थायी रूप देने का माध्यम ढूंढा गया तो चित्रकला का अस्तित्व सामने आया। आदिम सभ्यता से लेकर वर्तमान तक चित्रकला का प्रमुख स्थान रहा है क्योंकि कल्पना का स्पष्ट रूप चित्रकला ही उभार सकती है लोक संस्कृति की मनोहारी धरोहर, रंगोली, सांझी, अल्पना आदि से लेकर आधुनिक कला के

दौर तक कूंची द्वारा अनेको रंग बिखेरे गये हैं। इसी परम्परा को स्थायी रूप देने के लिए डॉ0 राम शब्द सिंह की तूलिका ने भी चित्रकला को समृद्ध बनाने में योगदान दिया है। 'श्री राम शब्द सिंह आधुनिक चित्रकला के एक उदीयमान चित्रकार है।'[10] इनके अनेको चित्र देश–विदेश में व्यक्तिगत संग्रह में है। अनेकों चित्र पुरस्कृत हुए है। लोक कला से प्रभावित उ0प्र0 के समकालीन चित्रकारों में राम शब्द सिंह एक प्रतिष्ठित व्यक्तित्व हैं।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची :

1. रंगिनी, अगस्त 1977, वर्ष 4, अंक 84
2. आज सायं समाचार (साप्ताहिक विशेषांक) रविवार 20 सितम्बर 1974
3. समकालीन आधुनिक भारतीय कला पर लोक–कला का प्रभाव, वंदना शर्मा, कलावार्ता, अंक–122–123, संयुक्तांक, 2009, पृ0 37
4. प्रो0 रामचन्द्र शुक्ल, प्रथम दृश्यकला प्रदर्शनी के अवसर पर 26.11.74
5. प्रो0 राम चन्द्र शुक्ल, राज्य ललित कला अकादमी लखनऊ की ओर से आमंत्रित चित्रकला प्रदर्शनी, 2008 के कैटलाग से।
6. जयदेश गुरूवार 3 जून सन् 1976
7. डॉ0 राम शब्द सिंह से साक्षात्कार का अंश (सहारनपुर स्थित उनके आवास पर) 2009
8. क्षेत्रिय आवाज (पत्रिका) 2006, पृ0सं0 26
9. प्रो0 रामचन्द्र शुक्ल (2006 में डॉ0 राम शब्द सिंह की ललित कला अकादमी, उ0प्र0 की आमंत्रित चित्रकला प्रदर्शनी के कैटलाग से)
10. रायकृष्ण दास 1974, एक प्रदर्शनी के अवसर पर